ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-६८
दिनांक- मंगलवार, १३ सितम्बर, २०२२

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 31.3 एवं 24.0 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 91 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 86 प्रतिशत, हवा की औसत गति 6.7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 3.1 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 4.9 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 28.7 एवं दोपहर में 32.1 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 14.2 मि0मी0 वर्षा रिकार्ड हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(14–18 सितम्बर, 2022)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान वि भाग के सहयोग से जारी 14–18 सितम्बर, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में आसमान में मध्यम बादल छाये रह सकते हैं। पूर्वानुमानित मौसम के 2–3 दिनों तक मानसून के सक्रिय बनने से उत्तर बिहार के अधिकतर जिलों के अनेक स्थानों पर हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। कुछ स्थानों पर मध्यम से थोड़ा अधिक भी वर्षा होने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 31 से 32 डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान 24 से 25 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार के साथ अगले दो दिनों तक पूरवा हवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 90 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई खड़ी फसलों में फिलहॉल सिंचाई स्थगित रखें एवं फसलों में कीटनाशी दवाओं का छिड़काव सावधानी पूर्वक आसमान साफ रहने पर हीं करें। मक्का, खरीफ प्याज, चारा एवं अन्य सब्जियों वाली फसलों में आवश्यकतानुसार नत्रजन उर्वरक का व्यवहार करें।
- अगात बोयी गई धान की फसल जो गाभा निकलने की अवस्था में आ गयी हो, उसमें वर्षा के बाद 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। धान की फसल जो दुग्धाअवस्था में आ गयी हो उसमें गंधी बग कीट की नियमित रुप से निगरानी करें। इस कीट के शिशु एवं पौढ़ दोनों जब पौधों में बाली निकलती है तो यह बालियों का रस चुसना प्रारंभ कर देती हैं जिससे दाने खोखले एवं हल्के हो जाते हैं तथा छिलका का रंग सफेद हो जाता है। धान की दुग्धावस्था में यह पौधों को अधिक क्षति पहुचाती है जिससे उपज में काफी कमी होता है। इसके शरीर से विशेष प्रकार का बदबु निकलती है, जिसकी वजह से इसे खेतों में आसानी से पहचाना जा सकता है। इसकी संख्या जब अधिक हो जाती है तो एक–एक बाल पर कई कीट बैठे मिलते है।
- पिछात धान की फसल जो कल्ले निकलने की अवस्था में वर्षा के बाद 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। इस फसल में तना छेदक (स्टेम बोरर) एवं पत्ती लपेटक (लीफ फोल्डर) कीट की निगरानी करें। पत्ती लपेटक कीट के पिल्लू धान के पत्तियों के दोनो किनारों को रेषमी धागे से जोड़कर उसके अन्दर रहते है तथा पत्तियों की हरीत्तिमा को खाता है। बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने–दार दवा का 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें। किसान भाई नेत्रजन उर्वरक के साथ बताई गयी कीटनाषक दानेदार दवा को अच्छी प्रकार से मिलाकर खेतों में समान रुप से व्यवहार कर सकते है।
- अरहर की बुआई वर्षा की संभावना को देखते हुए सावधानी पुर्वक अविलंब संपन्न करने का प्रयास करें। इसके लिए पूसा–9 एवं शरद प्रभेद अनुषंसित है। बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए। जुन–जुलाई में बोयी गई अरहर की फसल में कीट–व्याधि का निरीक्षण करते रहें।
- भिंडी, उरद् और मूंग की फसल में पीला मोजैक वायरस रोग की निगरानी करें। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। इसमें पौधे की षिराए पीली होकर मोटी हो जाती है और बाद में पत्तियाँ भी पीली परने लगती है। बीमारी की उग्र अवस्था में तने एवं फलों का रंग भी पीला पर जाता है। रोगग्रस्त पौधा एवं फलियाँ छोटे रह जाते है। रोगग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी0ली0 प्रति 3 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- लत्तीदार वाली सब्जियों की फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। वर्त्तमान नमीयुक्त गर्म मौसम इस कीट के प्रकोप के लिए अनुकूल है। मादा मक्खी लत्तीदार सब्जियों के कोमल फलों के अन्दर अण्डे देती है। ग्रसित फलों के छेद से लसदार हल्के भूरे रंग का द्रव निकलता है जो सुखने पर खुरदरे खुरट का रुप ले लेता है। अण्डे से मैगोट बनते ही वह गुद्दे को खाकर स्पंज जैसा बहुत सारे छेद कर देता है। जिससे फलों में सड़न प्रारंभ हो जाती है। क्षतिग्रस्त फल पतला टेढ़ा–मेढ़ा, कभी–कभी तो पीले पड़कर डंठल से अलग होकर गिर जाते है। यह मैगोट एक फल को खाने बाद फूदककर दुसरे फल को खाता है। क्षतिग्रस्त फल खाने योग्य नही रहता। कीट नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम सभी क्षतिग्रस्त फलों को इक्ठा कर नष्ट कर दें। मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करे। अधिक क्षति होने पर 1 किलोंग्राम छोआ एवं 2 लीटर मैलाथियान 50 ई0सी0 तरल दवा को 800 से 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में समान रुप से छिड़काव आसमान साफ रहने पर हीं करें।
- मूली एवं गाजर की अगेती बुआई करें। मूली के लिए पूसा चेतकी, पूसा देशी, पूसा हिमानी, जौनपुरी जापानी सफेद, पूसा रश्मि, जापानी सफेद, पंजाब सफेद, अर्का निषान्त आदि प्रभेद अनुषंसित है। गाजर के लिए पूसा केसर, पूसा मेघाली, पूसा यमदागिनी, अमेरिकन ब्युटी, कल्याणपुर येलो एवं नैन्टेस प्रभेद अनुषंसित है। बीजदर 4 से 5 कि0ग्रा0 प्रति हेक्टेयर तथा 25X10 से0मी0 की दूरी पर बुआई करें।

आज का अधिकतम तापमानः 31.1 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.4 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 24.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.4 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम विज्ञान)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी